DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
नाटक एवं नाटककार
LIVE
22-07-2024 09:00 AM

हिन्दी नाटक का उद्भव

हिन्दी साहित्य में नाटक के विकास उसके सम्पूर्ण पहलु एवं विधाओं का वर्णन अग्रलिखित अध्याय में किया गया है।

नाटक शब्द की उत्पति 'नट्' धातु से मानी जाती है। ''पाणिनि ने 'नाट्य' शब्द की व्युत्पत्ति 'नट्' धातु से सिद्ध की है।'' जिसका अर्थ नाटक खेलने वाला या अभिनेता है। शब्दकोश के अनुसार, ''नाटक शब्द का अर्थ- वह साहित्यिक रचना जिसमें कथावस्तु चरित्र, क्रिया व्यापार और संवाद योजना की ऐसी संरचना हो जिसे मंच पर प्रस्तुत किया जा सके।''

'काव्येषु नाटक रम्यम्' के अनुसार, नाटक सर्वाधिक रमणीय तथा काव्य में श्रेष्ठ नाट्य विधा है।

"भरतमुनि ने नाटक को लोक व्यवहारों का अनुकरण कहा है- लोकवृत्तानुकरणं नाट्य मेतन्मयाकृतम्।"

नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाने वाला एक ऐसा काव्य रूप है, जो एक साथ शिक्षित-अशिक्षित पाठकों एवं दर्शकों के मन को आनन्द देता है। "नाटक को दृश्य काव्य कहा जाता है एवं काव्य कला में श्रेष्ठ माना गया है।"

नाटक में दर्शक और अभिनेता दोनों बराबर के भागीदार होते हैं।

नाटक के तत्त्व

1. कथावस्तु
2. पात्र एवं चरित्र चित्रण
3. संवाद
4. देशकाल वातावरण
5. भाषा शैली
6. अभिनेयता
7. उद्देश्य

श्री निवासदास

❖ लाला श्री निवासदास द्वारा रचित **'रणधीर प्रेम मोहिनी'** में पटना के राजकुमार रणधीर और राजकुमारी प्रेम मोहिनी की प्रेमकथा है। यह हिन्दी का प्रथम दुखांत नाटक माना जाता है।

❖ श्री निवासदास कृत **'प्रह्लाद चरित्र'** नाटक राम-कृष्ण चरित्र पर आधारित नाटक है।

❖ **'रणधीर प्रेम मोहिनी, तप्ता संवरण'** प्रेम प्रधान तथा रुमानी नाटक हैं।

❖ श्री निवासदास कृत नाटक 'संयोगिता स्वयंवर' ऐतिहासिक नाटक है।

प्रमुख नाटक-

- ❖ रणधीर प्रेम मोहिनी (1877)
- ❖ तप्ता संवरण (1883)
- ❖ संयोगिता स्वयंवर (1886)
- ❖ प्रहलाद चरित्र (1888)

राधाकृष्ण दास - राधाकृष्ण दास कृत नाटक पद्मावती और महाराणा प्रताप ऐतिहासिक नाटक है, दु:खिनी बाला सामाजिक नाटक है।

प्रमुख नाटक - दु:खिनी वाला (1887), पद्मावती (1882), धर्मालाप (1885), महाराणा प्रताप (1897)

किशोरी लाल गोस्वामी - किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'मयंक मंजरी' - शृंगार और वीर रस प्रधान नाटक हैं। इस नाटक का उद्देश्य सामाजिक सुधार और नारी स्वतंत्रता है।

प्रमुख नाटक - मयंक मंजरी (1891), प्रणयिनी परिणय (1890)

खड्ग बहादुर मल्ल

महारास (1885), कल्पवृक्ष (1886), रति कुसुमायुध (1885), भारत आरत (1885)।

अयोध्या सिंह उपाध्याय

प्रद्युम्न विजय (1893), रुक्मिणी परिणय (1894)।

बालकृष्ण भट्ट

नल-दमयन्ती स्वयंवर 'वृहन्नला', नई रोशनी का विष, जैसा काम वैसा परिणाम, आचार, विडमबन।

भारतेन्दु युगीन अन्य प्रमुख नाटककार एवं उनके नाटक

नाटककार	नाटक
हरिहरदत्त दूबे	महारास (1884)
सूर्यनारायण सिंह	श्यामानुराग नाटिका (1899)
चन्द्र शर्मा	उषाहरण (1887)
कार्तिक प्रसाद खत्री	उषाहरण (1892)
शालिग्राम लाल	अभिमन्यु वध (1876)
	अर्जुन-मद-मर्दन (1876)
	पुरू-विक्रम

देवकीनन्दन खत्री	सीताहरण रामलीला (1829)
शीतला प्रसाद त्रिपाठी	रामचरितावली (1887)
द्विजदास	रामचरित्र नाटक (1891)
शालिग्राम शुक्ल	लावण्यवती सुदर्शन (1892)
गोकुलनाथ शर्मा	पुष्पवती (1899)
गोपाल राम गहमरी	देश-दशा (1892)
काशीनाथ खत्री	विधवा-विवाह
देवकीनन्दन त्रिपाठी	भारत-हरण (1899)

प्रताप नारायण मिश्र	संगीत शाकुन्तला कलि (1893) कौतुक रूपक
विजयानन्द त्रिपाठी	महा अंधेर नगरी
नारायण प्रसाद 'बेताब'	कृष्ण-सुदामा गोरख धंधा मीठा जहर रामायण नाटक

नोट-नारायण प्रसाद 'बेताब' के सभी नाटक पारसी थियेटर के लिए 'लिखे गए हैं।

द्विवेदी युगीन नाटककार एवं उनके नाटक

नाटककार	नाटक
गंगा प्रसाद गुप्त	वीरजयमल (1903)
वृन्दावन लाल वर्मा	सेनापति उदल (1909)
	धीरे-धीरे (1939)
	राखी की लाज (1943)
	सगुन (1946)
	फूलों की बोली (1947)
	झाँसी की रानी (1948)

वृन्दावन लाल वर्मा

- मंगलसूत्र (1949)
- खिलौने की खोज (1950)
- पूर्व की ओर (1950)
- बीरबल (1950)
- नीलकण्ठ (1951)
- केवट (1951)
- पीले हाथ (1952)
- जहाँदारशाह (1952)
- ललित विक्रम (1953)

वृन्दावन लाल वर्मा →	निस्तार (1955)
	देखा-देखी (1956)
	कश्मीर का काँटा (1948)
बद्रीनाथ भट्ट	चन्द्रगुप्त (1915)
	कुरूवन दहन (1912)
कृष्णप्रकाश सिंह	पन्ना (1915)
हरिदास माणिक	संयोगिता हरण (1915)
परमेष्ठीदास	वीर चुड़ावत सरदार (1918)
मिश्र बन्धु	नेत्रोन्मीलन (1915)

कृष्णानन्द जोशी	उन्नति कहाँ से होगी (1915)
जीवानन्द शर्मा	भारत विजय (1906)
शिवनन्दन सहाय	सुदामा (1907)
बनवारी लाल	कृष्णकथा
	कंस वध
रामनारायण मिश्र	जनकबाड़ा (1906)
महावीर सिंह	नल दमयन्ती (1905)
बालकृष्ण भट्ट	वेणु संहार (1909)
लक्ष्मी प्रसाद	उर्वशी (1910)
माखनलाल चतुर्वेदी	कृष्णार्जुन-युद्ध (1918)

जयशंकर प्रसाद

- ❖ जयशंकर प्रसाद का प्रथम नाटक 'सज्जन' का कथानक महाभारत से लिया गया है। इसमें गीतों का आधिक्य वार्तालाप में शायरी और शैली में पारसी नाटकों का प्रभाव है।
- ❖ 'कल्याणी परिणय' में चन्द्रगुप्त व सिल्यूकस की कथा है।
- ❖ 'करुणालय' में वैदिक काल का चित्रण है। इसमें हरिश्चन्द्र व विश्वामित्र का पौराणिक आख्यान है।
- ❖ 'सज्जन', 'कल्याणी परिणय' और 'करुणालय' लघु नाट्य कृतियाँ हैं तथा प्रसाद जी की रचना प्रक्रिया के प्रथम सोपान हैं। इनमें 'करुणालय' हिन्दी का प्रथम गीतिनाट्य है।

❖ 'प्रायश्चित' नाटक में जयचन्द के मूर्खतापूर्ण कुचक्र के कारण पृथ्वीराज का अन्त दिखाया गया है।

❖ 'राज्यश्री' नाटक का आधार 'हर्षचरित' तथा चीनी यात्री ह्वेसांग का ऐतिहासिक विवरण है, जिसमें कल्हण की राजतरंगिणी की कथा है। जयशंकर प्रसाद ने 'राज्यश्री' को प्रथम ऐतिहासिक रूपक कहा है।

❖ 'जनमेजय का नाग यज्ञ' में परीक्षित का प्रतापी पुत्र जनमेजय पिता का बदला लेने के लिए नागों के विध्वंस की कथा है। इस कथा के माध्यम से वर्ष 1926 के साम्प्रदायिक दंगों को चित्रित किया गया है। इसमें दो विरोधी जातियों आर्यों और नागों का संघर्ष चित्रित है।

❖ जयशंकर प्रसाद कृत 'विशाखा' नाटक का कथानक कल्हण की 'राजतरंगिणी' के आरम्भिक अंश के आधार पर निर्मित हुआ है।

❖ 'अजातशत्रु' नाटक में बौद्धकाल का चित्रण है, जिसमें तीन राज परिवारों मगध, कौशल और कौशाम्बी को केन्द्र मानकर शासकों की महत्त्वाकांक्षा और सत्ता-लिप्सा को दिखाया गया है।

❖ रमेशचन्द्र शाह ने 'कामना' को कामायनी का पूर्वराग कहा है।

कामना संस्कृत के 'प्रबोध चन्द्रोदय' की भाँति अन्योपदेशिक नाटक हैं। इसमें भावनाओं को नाटकीय पात्रों का रूप दिया गया है।

प्रमुख नाटक		वर्ष
सज्जन	-	1910
कल्याणी परिणय	-	1912
करुणालय	-	1912
प्रायश्चित	-	1913
राज्यश्री	-	1915
विशाखा	-	1921
अजातशत्रु	-	1922
जनमेजय का नाग यज्ञ	-	1926

कामना	-	1927
स्कन्दगुप्त	-	1928
एकघूँट	-	1930
चन्द्रगुप्त	-	1931
ध्रुवस्वामिनी	-	1933

प्रसाद के नाटकों के प्रमुख पात्र

नाटक	नारी पात्र	पुरुष पात्र
चन्द्रगुप्त	अलका, सुवासिनी, कल्याणी, लीला, नीला, मालविका, कार्नेलिया, मौर्य पत्नी एलिस	चन्द्रगुप्त, चाणक्य, शंकटार, सिंहरण, आम्भीक, राक्षस, पर्वतक, सिल्यूकस, शकटार, सिकन्दर, फिलिप्स, ऐनीसा क्रिटीज देवल नागदत्त, साइबींटय मैगस्थनीज, दाण्डयायन
स्कन्दगुप्त	देवकी अनंतदेवी, जयमाला देवसेना, विजया, कमला, रामा, मालिनी	स्कन्दगुप्त कुमारगुप्त, गोविन्दगुप्त, पर्णदत्तं, चक्रपालित, बंधुवर्मा, भीमवर्मा, मातृ गुप्त, प्रपंचबुद्धि, सर्वनाग, कुमारदास, परगुप्त, भट्टार्क,

		पृथ्वी सेन, खिंगल, मुद्गल, प्रख्यात कीर्ति महांदडनायक
अजातशत्रु	वासवी, छलना, पद्मावती, मागंधी, वासवदत्ता, शक्तिमती, मल्लिका, बाजिरा, नवीना, विजय, सरला, दासी, नर्तकी	बिम्बसार, अजातशत्रु, उदयन, प्रसेनजित, विरूद्धक, गौतम, सारिपुत्र, आनन्द, कंचुकी देवदत्त, समुद्र दत्त, जीवक, वसंतक, सुदत्त, दीर्घकारायण, लुब्धक
ध्रुवस्वामिनी	ध्रुवस्वामिनी, मंदाकिनी, कोमा	चन्द्रगुप्त, रामगुप्त, पुरोहित, शंकराज, खिंगल, मिहिरदेव, शिखरस्वामी

सुदर्शन - सुदर्शन प्रेमचन्द युग के कथाकार हैं। इनका दृष्टिकोण सुधारवादी है। सुदर्शन की भाषा सरल, स्वाभाविक, प्रभावोत्पादक और मुहावरेदार है।

सुदर्शन कृत 'आनरेरी मजिस्ट्रेट' उत्कृष्ट प्रहसन है। इसमें किंचित मात्र अश्लीलता तथा अस्वाभाविकता का समावेश नहीं है।

प्रमुख नाटक

दयानन्द नाटक (1917), अंजना (1923), भाग्यचक्र (1937), आनरेरी मजिस्ट्रेट।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' – महात्मा ईसा (1922), चुम्बन (1937), डिक्टेटर (1937), गंगा का बेटा (1940)।

जी.पी. श्रीवास्तव - उलटफेर (1918), दुमदार आदमी (1919), मरदानी औरत (1920), विवाह विज्ञापन (1927), मिस अमेरिकन (1929) |

लक्ष्मीनारायण मिश्र के प्रमुख नाटक

- लक्ष्मीनारायण मिश्र कृत 'वितस्ता की लहरें' नाटक में सिकन्दर को कुटिल विजेता के रूप में चित्रित किया गया है।
- लक्ष्मीनारायण मिश्र कृत नाटक 'संन्यासी' में विदेशी शासकों की धोखाधड़ी, गाँधीजी के असहयोग, रौलट एक्ट, पंजाब हत्याकाण्ड आदि से उत्पन्न स्थितियों का चित्रण किया गया है।

नाटक		(रचना वर्ष)
अशोक	-	1927
संन्यासी	-	1930
राक्षस का मन्दिर	-	1931
मुक्ति का रहस्य	-	1932
राजयोग	-	1933
सिन्दूर की होली	-	1934
आधी रात	-	1934
गरुड़ ध्वज	-	1945

नारद की वीणा - (1946)

वत्सराज - (1950)

दशाश्वमेध - (1950)

चित्रकूट - (1946)

वितस्ता की लहरें - (1953)

धरती का हृदय - (1974)

काल विजय - (1974)

गंगाद्वार - (1974)

वृन्दावनलाल वर्मा

वृन्दावनलाल वर्मा हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार हैं। वर्ष 1909 में वृन्दावनलाल वर्मा ने 'सेनापति ऊदल' नामक नाटक छापा जिसे सरकार ने जब्त कर लिया। 'झाँसी की रानी', 'हंसमयूर', 'पूर्व की ओर' आदि इनके ऐतिहासिक नाटक हैं। 'झाँसी की रानी' में इसी नाम की औपन्यासिक कृति को नाटक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

- ❖ 'फूलों की बोली' में स्वर्ण रसायन द्वारा प्राप्त करने वालों की मूर्खता पर व्यंग्य किया गया है।
- ❖ 'पूर्व की ओर' 'पूर्वीय द्वीपों' में भारतीय संस्कृति के प्रचार की कथा का नाटकीय रूप है।
- ❖ 'हंसमयूर' का आधार 'प्रभाकर चरित' नामक जैन ग्रन्थ है।

लक्ष्मीकान्त वर्मा

लक्ष्मीकान्त वर्मा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे। वे उत्कृष्ट कोटि के समीक्षक, निबन्धकार, कवि, कथाकार, नाटककार और सम्पादक थे।

प्रमुख नाटक

तिन्दुवुलम् (1958), सीमान्त के बादल (1963), अपना-अपना जूता (1964), रोशनी एक नदी है (1974), ठहरी हुई जिन्दगी (1980), आदमी का जहर।

- लक्ष्मीकान्त वर्मा आधुनिकता बोध विसंगति के नाटककार हैं।